

आई.ए.आर.आई. क्षेत्रीय केंद्र, करनाल में “प्रशिक्षण एवं बीज वितरण कार्यक्रम” का सफल आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.)-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आई.ए.आर.आई.), नई दिल्ली द्वारा संचालित अनुसूचित जाति उप-योजना (एस.सी.एस.पी.) के अंतर्गत “प्रशिक्षण एवं बीज वितरण कार्यक्रम” का भव्य आयोजन आज संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, करनाल (हरियाणा) में किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों, विशेषकर अनुसूचित जाति वर्ग के किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों, गुणवत्तापूर्ण बीजों, पोषक तत्व प्रबंधन, और वैज्ञानिक पद्धतियों की जानकारी एवं सुविधा उपलब्ध कराना था, जिससे वे आत्मनिर्भर और लाभकारी कृषि की दिशा में अग्रसर हो सकें।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे डॉ. आर. एन. पडारिया, संयुक्त निदेशक (प्रसार), आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली। उन्होंने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि “*अनुसूचित जाति उप-योजना का उद्देश्य केवल प्रशिक्षण प्रदान करना नहीं, बल्कि किसानों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर उन्हें तकनीकी रूप से सशक्त बनाना है। जब किसान स्वयं तकनीक अपनाकर नवाचार करेंगे, तभी वास्तविक कृषि क्रांति संभव होगी।*” उन्होंने किसानों को मृदा परीक्षण, सूक्ष्म पोषक तत्व प्रबंधन, जैविक एवं एकीकृत पोषण प्रबंधन, जल-संरक्षण तकनीकों और पराली प्रबंधन की महत्ता पर बल दिया।

विशिष्ट अतिथि श्री विजय सेतिया, पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय चावल निर्यातक संघ ने अपने संबोधन में कहा कि “*भारत की कृषि को प्रतिस्पर्धी और टिकाऊ बनाने के लिए हमें गुणवत्तापूर्ण बीजों, वैज्ञानिक विधियों, और फसल विविधीकरण पर ध्यान देना होगा। किसान यदि नवाचार और विपणन की आधुनिक तकनीकें अपनाएं तो उनकी आय कई गुना बढ़ सकती है।*” उन्होंने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

डॉ. संदीप कुमार लाल, नोडल अधिकारी (एस.सी.एस.पी.) ने योजना की रूपरेखा, उद्देश्यों और अब तक हुए कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आई.ए.आर.आई. के वैज्ञानिक दल लगातार सामाजिक रूप से कमजोर वर्गों के किसानों तक तकनीकी नवाचार और उच्च गुणवत्ता वाले इनपुट्स पहुँचाने के लिए कार्यरत है।

डॉ. शिव कुमार यादव, अध्यक्ष, आई.ए.आर.आई. क्षेत्रीय स्टेशन, करनाल ने किसानों को प्रेरित करते हुए कहा कि “*बीज उत्पादन केवल तकनीकी कार्य नहीं, बल्कि एक आर्थिक अवसर है, जो किसानों को उद्यमी बना सकता है।*” उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अधिकाधिक लाभ उठाएं और फील्ड स्तर पर तकनीक के दूत बनें। डॉ. संदीप सिहाग ने पर्यावरणीय चुनौतियों के अनुरूप पर्यावरण-अनुकूल और जलवायु-स्मार्ट कृषि पद्धतियों को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि “*पराली जलाने के बजाय उसका उपयोग ऊर्जा स्रोत, जैविक खाद और पशु आहार के रूप में किया जा सकता है। यह किसानों की आय के नए अवसर खोलता है और प्रदूषण में भी कमी लाता है।*”

कार्यक्रम में लगभग 500 किसान भाइयों और बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों को संस्थान द्वारा चयनित इनपुट सामग्री जैसे गेहूँ और सरसों की उन्नत किस्मों के बीज, वर्मी कम्पोस्ट, जिंक सल्फेट, स्प्रे पंप तथा सब्जी बीज किट वितरित किए गए। किसानों ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से उन्हें नवीनतम तकनीकों की जानकारी, व्यावहारिक अनुभव और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा मिलती है।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. अश्वनी कुमार, प्रधान वैज्ञानिक सहित उत्कृष्ट कार्य करने वाले तकनीकी, प्रशासनिक, यंग प्रोफेशनल्स, एम.टी.एस. एवं दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को उनके विशिष्ट योगदान के लिए प्रमाणपत्र और मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान समारोह संस्थान के प्रगतिशील और प्रेरक कार्य वातावरण का प्रतीक रहा।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. संगीता यादव, प्रधान वैज्ञानिक, आई.ए.आर.आई., करनाल द्वारा किया गया, जिन्होंने कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित किया। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. राकेश सेठ, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन किसानों और वैज्ञानिकों के बीच एक सशक्त संवाद सेतु का कार्य करते हैं, जो कृषि के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस अवसर पर डॉ. रेनू सिंह, डॉ. रुचि बंसल, डॉ. शशांक पी. आर., डॉ. चंद्रमणि वाघमरे (आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली) तथा डॉ. रविंदर कुमार (भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल) सहित अनेक वरिष्ठ वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

ICAR–IARI Regional Station, Karnal successfully organizes “Training and Seed Distribution Programme”

A “Training and Seed Distribution Programme” was successfully organized today at the ICAR–Indian Agricultural Research Institute (IARI), Regional Station, Karnal (Haryana) under the Scheduled Caste Sub Plan (SCSP) implemented by the ICAR – Indian Agricultural Research Institute (IARI), New Delhi. The programme aimed to empower farmers, particularly those belonging to the Scheduled Caste community, by providing them with access to advanced agricultural technologies, quality seeds, nutrient management practices, and scientific methods to enhance their self-reliance and move toward profitable and sustainable farming.

The Chief Guest, Dr. R. N. Padaria, Joint Director (Extension), IARI, New Delhi, delivered an inspiring address emphasizing that “The primary goal of the Scheduled Caste Sub Plan is not merely to impart training, but to develop scientific temper among farmers and make them technologically empowered. Real agricultural transformation will happen only when farmers themselves become innovators and adopt science-based solutions.” He also highlighted the importance of soil testing, micronutrient management, organic and integrated nutrient management, water conservation practices, and residue management in improving farm productivity and environmental health.

Special Guest, Mr. Vijay Setia, Former President, All India Rice Exporters Association, in his address said, “To make Indian agriculture competitive and sustainable, we must focus on quality seeds, scientific crop management, and diversification. By adopting innovation and modern marketing practices, farmers can significantly enhance their income.” He also stressed the need for climate-resilient and sustainable farming in view of the emerging challenges of climate change.

Dr. Sandeep Kumar Lal, Nodal Officer (SCSP), briefed the participants about the objectives, structure, and progress of the programme. He informed that IARI’s scientific teams are continuously working to ensure the reach of technological innovations and high-quality inputs to farmers belonging to socially disadvantaged groups. Dr. Shiv Kumar Yadav, Head, IARI Regional Station, Karnal, motivated farmers by stating that “Seed production is not merely a technical activity but a profitable enterprise that can transform farmers into agri-entrepreneurs.” He encouraged the participants to actively take part in training programmes and act as ambassadors of scientific farming practices in their villages. Dr. Sandeep Sihag emphasized the need to adopt environment-friendly and climate-smart agricultural practices suitable to changing environmental conditions. He said, “Instead of burning crop residues, farmers can use them as an energy source, organic manure, or livestock feed. This not only provides an additional source of income but also reduces pollution.”

The programme witnessed enthusiastic participation from around 500 farmers (men and women). Participants were provided with selected input materials including improved varieties of wheat and mustard seeds, vermicompost, zinc sulfate, vegetable seed kits, and agricultural tools such as spray pumps. Farmers expressed that such programmes offer them valuable technical knowledge, practical experience, and motivation toward self-reliant farming.

During the event, Dr. Ashwani Kumar, Principal Scientist, along with outstanding technical, administrative, young professionals, MTS, and contractual staff, were felicitated with certificates and mementos for their exceptional contributions. The felicitation ceremony reflected the institute’s culture of recognizing excellence and dedication. The event was coordinated by Dr. Sangeeta Yadav, Principal Scientist, IARI, Karnal, who ensured its smooth conduct. The vote of thanks was proposed by Dr. Rakesh Seth, Principal Scientist, who emphasized that such programmes serve as a strong bridge between farmers and scientists, essential for the holistic development of Indian agriculture. The programme was attended by several senior

scientists including Dr. Renu Singh, Dr. Ruchi Bansal, Dr. Shashank P. R., Dr. Chandramani Waghmare (IARI, New Delhi) and Dr. Ravinder Kumar (ICAR–Indian Institute of Wheat and Barley Research, Karnal).

